IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 4, March 2024

21oha Inh esa HkweMyhdj.k vkSj xka/khoknh n'kZu

डॉ. राणा प्रताप सिंह

(प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग)

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,

माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाडा (सिरोही) राजस्थान

शोध पत्र सारांश

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जब समाज को संस्कृति और धर्म बांटने का काम कर रहे हैं तो अर्थव्यवस्था, सूचना प्रोधोगिकी एवं बाजार सम्भावनाएँ विश्व को एक गांव में तब्दील कर रही है, अहस्तक्षेपवाद वैश्वीकरण का पर्याय हैं और वैश्वीकरण की प्रक्रिया आज से नहीं अपितु अतीत से संचालित है। सिंधु सभ्यता, दजला–फरात, मिस्र, यूनान एवं रोमनकाल से जारी है, लेकिन अब वैश्वीकरण के स्वरुप में जरुर परिवर्तन आया है। आज खुला बाजार खुली संस्कृति सबल को और बलिष्ठ बना रही है व कमजोर को अति कमजोर। इस परिदृश्य में गांधीवादी अर्थशास्त्र के बुनियादी तत्व जैसे मानव संसाधन का समुचित उपयोग, सत्ता एवं सम्पत्ति का विकेन्द्रीकरण तथा समता का भाव आदि की महता बढ़ जाती है, इनके द्वारा ही विश्व का संतुलित समग्र विकास सम्भव हो सकता है।

गांधीजी ने पूंजी और बाजार की बजाय मानव के सामाजिक विकास को प्राथमिकता दी, उनके अनुसार लोगों को बेकाम रखना सबसे बड़ी सामाजिक बुराई है। उन्होनें कहा कि जो राष्ट्र अपने प्रत्येक नागरिक के हाथ में हुनर नहीं दे सकता वह कभी आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। उन्होनें कहा कि हर हाथ को काम मिले, यह प्रत्येक राष्ट्र का प्राथमिक दायित्व है। इस कथन से प्रेरित वर्तमान सरकार रोजगार गारण्टी योजना को संचालित कर रही है। वास्तव में लोगों को बेकाम रखना सबसे बड़ी सामाजिक बुराई है। इस प्रकार गांधी किसी राष्ट्र की बाहरी चकाचौंध तथा भौतिक विकास में विष्वास नहीं रखते, अपितु उत्पादन एवं संसाधन के न्यायोचित वितरण में विष्वास रखते थे जो आज के युग की परमावष्यकता है, इसकी पूर्ति उदारीकरण द्वारा कदापि नहीं हो सकती क्योंकि एक तरफ ये गरीब और अमीर के बीच में खाई को बढ़ावा देती है, दूसरी तरफ पूंजी व उत्पादन को निजीकरण द्वारा केंद्रित तो करती हैं साथ ही रोजगार विहीन ढ़ांचे के निर्माण में भरसक सहायता प्रदान करती है, ऐसी विकट परिस्थितियों में एकमात्र गांधीदर्षन ही विष्व अर्थषास्त्र का पथप्रदर्षक बन सकता है यही इस पत्र का उद्देष्य है।